प्राकृत
व्याकरण प्रवेशिका

सत्यरञ्जन बनर्जी


भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली


राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली मानित विश्वविद्यालय

प्राकृत
व्याकरण प्रवेशिका

सत्यरञ्जन बनर्जी

एम.ए., पी-एच.डी. (कलकत्ता)

पी-एच.डी. (एडिन्बरो)

'प्राकृत-विद्या-मनीषी' (जैन विश्व भारती)

भूतपूर्व प्रोफेसर, कलकत्ता विश्वविद्यालय


भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली


राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली मानित विश्वविद्यालय

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका

सत्यरञ्जन बनर्जी

प्रकाशक

भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली

एवम्

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय),

५६-५७, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,

नई दिल्ली ११००५८

प्रथम संस्करण १९९९

प्रतिमुद्रणः मई, २०१२

Rs. 100/-

प्राप्ति स्थान

बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी

विजय वल्लभ स्मारक, जैन मन्दिर कॉम्पलेक्स,

२०वाँ किमी. जी. टी. करनाल रोड,

पोस्ट अलीपुर, दिल्ली ११००३६

फोन : 011-27202065, 27206630

प्रस्तावना

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका लिखने का अपना एक इतिहास है। विगत मई १९८९ में जब मैं कलकत्ता से लाडनूं आया, तब आचार्य श्री तुलसी ने मुझे आदेश दिया प्राकृत कार्यशाला आयोजित करने के लिए। आचार्य श्री के निर्देश को मैंने आशीर्वाद के रूप में स्वीकार किया। इसी आशीर्वाद के फलस्वरूप यह प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका आज आपके हाथों में है।

यह ग्रंथ प्राकृत सीखने के लिए प्रारम्भिक परिचय है। प्राकृत कार्यशाला केवल उन्हीं विद्यार्थियों के लिए है, जो प्राकृत नहीं जानते हैं। इसलिए इसमें केवल प्राकृत भाषा के जो मुख्य-मुख्य नियम हैं उसी के आधार पर यह प्रवेशिका विरचित हुई है। जो अधिक प्राकृत भाषा का ज्ञान जानते हैं उनके लिए यह ग्रंथ सामान्य सा हो सकता है।

भाषा सीखने के तीन स्तर हैं– प्रारम्भिक, माध्यमिक और उच्च। प्रारम्भिक पढ़ने के बाद मध्यम स्तर में प्रवेश होता है। मध्यम स्तर में भाषा के अन्य विषयों पर ध्यान देना होता है। प्रारम्भिक स्तर से अधिक नियम और व्याकरण इसमें आते हैं। उच्चस्तर में इससे भी अधिक व्याकरण, भाषा-तत्व के गूढ़ तथ्य, भाषा की वाक्य रीति इत्यादि विषयों पर अधिक ध्यान देना आवश्यक होता है। इन सभी स्तरों पर भाषा का साहित्य भी पढ़ाना पड़ता है और साहित्य से व्याकरण की व्याख्या भी करनी पड़ती है। इसलिए प्रारम्भिक स्तर में व्याकरण की आवश्यकता इतनी नहीं होती है कि जिससे प्रारम्भिक छात्रों को बहुत कठिनाई हो। इसी आधार पर यह प्रवेशिका अत्यन्त संक्षिप्त रूप में लिखी गई है। आशा है इससे प्राकृत भाषा का ज्ञान करने में सहयोग मिलेगा।

यह प्रवेशिका वस्तुतः कक्षा में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए तैयार कर वितरित किए गए अध्यायों का संकलन है। यह ज्ञान हर विद्यार्थी को भविष्य में प्राकृत भाषा पढ़ने हेतु सुविधा देगा।

आरम्भ में यह प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका तित्थयर के खण्ड २१ अंक ८, ९, १०, ११, १२, वर्ष १९९७, १९९८ में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुकी है। पठन की सुविधा के लिये जैन भवन ने इन लेखों को आकलन कर पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया। इस कार्य को साकार करने में जैन भवन के सचिव श्री पवित्र कुमार जी दुगड़ एवं सह सचिव श्री दिलीप सिंह जी नाहटा ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। इस कार्य की पूर्णता तित्थयर की संपादिका श्रीमती लता बोथरा के अथक परिश्रम एवं सहयोग के बिना असंभव थी। इस पूरी परियोजना के पीछे उनकी सार्थक परिकल्पना का भी महत्वपूर्ण हाथ रहा है। उनके इस योगदान के लिये मैं उनका आभारी हूँ। पर आभार प्रकट करने के स्थान पर उनको आशीर्वाद देता हूँ कि वे अपने निर्दिष्ट कार्य में सदा सफल होकर पत्रिका का नाम उज्ज्वल करें।

इस प्राकृत व्याकरण में जितने नियम अति संक्षिप्त हो सकते थे उतने ही दिये गये हैं। आशा है ये किताब पढ़ करके प्राकृत जिज्ञासु लोग बहुत ही लाभान्वित होंगे।

इति

श्री सत्यरंजन बनर्जी

विषय सूची

ध्वनि तत्त्व

रूपतत्त्व

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका

ध्वनि तत्त्व

(Phonology)

मुखबन्ध

प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्वरूप तीन भाषा में है। इन तीनों भाषाओं का नाम है– संस्कृत, पालि और प्राकृत। संस्कृत भाषा में मूलतः हिन्दु शास्त्र की परम्परा की खोज मिलती है। पालि भाषा में बौद्ध धर्म और दर्शन का स्वरूप मिलता है। प्राकृत भाषा में जैन धर्म और संस्कृति का एक परिचय है। प्राचीन भारत के लिए इन तीनों भाषाओं की उपयोगिता है।

प्राकृत साहित्य अति विशाल है। प्राकृत एक साधारण नाम है। इस भाषा में माहाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची और अपभ्रंश भाषा है। उपर्युक्त भाषा को छोड़कर और भी एक भाषा है जिसका नाम है अर्धमागधी। अर्धमागधी भाषा में जैन आगम शास्त्र लिखा हुआ है। किन्तु प्राकृत भाषा का एक साधारण रूप है जो कि हर उपभाषा में भी दिखाया जाता है। इसलिए हम लोग केवल प्राकृत भाषा का साधारण रूप देखते हैं। विशेष रूप केवल वही है जो साधारण रूप में मिलता नहीं है। इस तरह कुछ रूप और विशेपताएँ प्राकृत उपभाषा में मिलते हैं। नीचे हम लोग केवल प्राकृत भाषा का साधारण रूप देखेंगे जो सब उपभाषाओं में भी मिलता है।

१. प्राकृत भाषा की वर्णमाला

प्राकृत में निम्नलिखित वर्णमाला है–

स्वरवर्ण :

अ आ इ ई उ ऊ ए ओ

व्यंजनवर्ण :

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व

स ह ।

विशेष दृष्टि में मागधी प्राकृत में तालव्य श है ।

उच्चारणरीति :

प्राकृत वर्णमाला का उच्चारण सम्भवतया संस्कृत भापा की तरह होता है । इसलिए हम लोग इसके उच्चारण के बारे में साधारणतया ज्यादा नहीं जानते । लेकिन बीच में अगर किसी का उच्चारण संस्कृत से भिन्न होगा तो वह तत्तत् स्थल पर कहूंगा । तथापि निम्नलिखित विषय पर ध्यान देना आवश्यक है—

१. प्राकृत में ऋ ॠ ऌ ॡ नहीं होता है । इसके स्थल पर अ इ उ रि होता है । साधारणतया ऋ के स्थल पर अ होता है । इ और उ विशेष-विशेष शब्दों में होते हैं । किस नियम से ये सब परिवर्तन होता है, ये बताना काफी मुश्किल है । लेकिन परम्परा से यही मिलता है कि ओष्ठयवर्ण के साथ जब ऋ का संयोग होता है तब उ होना जरूरी है । यथा ऋ ष भ> प्राः वुसह/उसह होता है । किन्तु मृत>प्राः मअ होता है । इस तरह सभी जगह पर होगा ।

२. प्राकृत में ऐ औ नहीं होता है । उसकी जगह पर ए और ओ होता है ।

३. प्राकृत में आदि में न होता है/य के स्थल पर भी ज होता है । यथा यदि प्रा. में जइ होता है । किन्तु मागधी प्राकृत में सभी जगह पर य होता है । मागधी में कभी भी ज नहीं होता है ।

४. प्राकृत में सर्वत्र मूर्धन्य ण होता है । चाहे संयुक्त से या असंयुक्त हो, सर्वत्र मूर्धन्य होता है । लेकिन अर्धमागधी प्राकृत में आदि में और संयुक्त में दन्त्य न होता है । यथा राज्ञा प्राकृत में रण्णा, अर्धमागधी में रन्ना

होता है। विशेष उपभाषा में कुछ-कुछ विशेषता है। वह भी बताने की जरूरत नहीं है।

५. प्राकृत में तालव्य श मुर्धण्य ष नहीं होता है। केवल दन्त्य स होता है। किन्तु मागधी प्राकृत में केवल तालव्य श होता है। यथा मनुष्य प्रा. मणुस्स मागधी में मणुश्श।

६. प्राकृत में भिन्न वर्गीय वर्णों का संयुक्त वर्ण नहीं होता है। इसका मतलब यही है कि एक ही वर्ण के साथ संयुक्त वर्ण होता है। जैसे क का क ख इत्यादि रूप से संयुक्त वर्ण होता है। किन्तु संस्कृत में क के साथ जैसे त का त संयुक्त होता है वैसा प्राकृत में कभी नहीं होता है। सभी जगह पर इस तरह का अध्ययन होना चाहिए।

७. प्राकृत में विसर्ग नहीं होता है। उसकी जगह पर दो तरह का रूप मिलता है। यदि अन्तिम में अकारान्त शब्द के स्थान पर और शब्द के बाद विसर्ग होता है तो उस विसर्ग के स्थल पर ओ होता है। जैसे– सर्वतः प्राकृत में सव्वओ होता है। अगर विसर्ग के बाद कोई वर्ण होता है तो उसका द्वित्व हो जाता है। जैसे दुःख प्राकृत में दुक्ख होता है।

८. प्राकृत में म् के स्थल पर अनुस्वार होता है। चाहे वह वाक्य शेष हो और श्लोकावशेष हो उसके ऊपर एक दृष्टि डालना आवश्यक है।

९. पंचम नासिक्य वर्ण के साथ किसी वर्ण का संयुक्त अक्षर यदि हो तब वही नासिक्य वर्ण के स्थल पर अनुस्वार होता है। जैसे–वंकिम। किन्तु कभी-कभार किसी व्याकरण में पंचम नासिक्य वर्ण की भी उपस्थिति होती है। उसी के अनुसार वङ्किम भी चलता है। लेकिन खास प्राकृत में ऐसा होना ठीक नहीं है। प्राकृत व्याकरण में यद्यपि इसके बारे में दोनों रूप को ही स्वीकार किया है तब भी अनुस्वार लिखना ही उचित है।

१०. ऊपर में उल्लिखित नियमावली प्राकृत भाषा सीखने के लिए काफी जरूरी है। विशेष-विशेष उपभाषा में इसका कुछ व्यतिक्रम दिखाया जाता है। लेकिन वह तत्तत् स्थल पर बताना उचित होगा।

२. अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग

प्राकृत में अनुस्वार, अनुनासिक और विसर्ग के प्रयोग के विषय में कुछ विशेषताएँ हैं। साधारणतया जैसे संस्कृत में होते हैं प्राकृत में ऐसा नहीं होता है।

अनुस्वार

प्राकृत में शब्द के अन्त का "मं" अनुस्वार होता है अर्थात् सर्वम् प्रा. सव्वं होता है। चाहे वाक्य के अन्त में और पद के प्रथम चरण के अन्त में "म्" के स्थान पर केवल अनुस्वार ही होता है। किन्तु म् के बाद जब स्वर वर्ण होता है तब म् उसी वर्ण स्वर के साथ जुड़ जाता है। परन्तु यहां पर भी अनुस्वार हो सकता है अर्थात् "म्" के स्थान पर अनुस्वार भी होता है, इसका अर्थ म् के बाद प्राकृत में दो तरह का रूप होता है।

१. "म्" के स्थान पर चाहे स्वर वर्ण और व्यंजन वर्ण हो अनुस्वार ही होता है। जैसे कि सव्वं अहं करेमि अर्थात् सव्वं के बाद यद्यपि अहम् शब्द है तब भी सव्वं अनुस्वार होगा।

२. कभी कभी "म्" के बाद अगर स्वर वर्ण हो तो ओ "म्" स्वर के साथ जुड़ जाता हैं। अर्थात् सव्वं "म्" अहं करेमि इसका रूप प्राकृत में सव्वमहं करेमि हो सकता है।

३. वर्ग का जो पंचम नासिक्य वर्ण होता है उसके स्थान पर भी अनुस्वार होता है अर्थात् शब्द के बीच में जब वर्गीय नासिक्य वर्ण होता है तब उसके स्थान पर भी अनुस्वार होता है। वर्गीय पंचम नासिक्य वर्ण ये है– ङ्, ञ्, ण्, न्, म्। यथा पंक, संख, अंगण लंघण, कंचुए, लंहण, अंजीऐ, कंटओ, उक्कंठा, कंड, संढो, अंतरं, पंथो, चंदो, बंधवो, कंपइ, वंफइ कलंबो, आरंभो इत्यादि। इन सभी स्थानों पर वर्ग का पंचम नासिक्य वर्ण हो सकता है। अर्थात पङ्क, कञ्चुअ, कण्टअ अन्तर सम्पइ इत्यादि।

प्राकृत व्याकरणों ने वर्गीय नासिक्य वर्ग के विषय में विकल्प विधि दी है। अर्थात् दो तरह का वर्ण हम लोगों के समक्ष उपस्थित होता है, तव भी यही मालूम होता है कि प्राकृत में केवल अनुस्वार होना ही अच्छा है। वस्तुतः यही है कि जहां वर्गीय नासिक्य वर्ण होता है वहां हम लोग ऐसा समझेंगे कि उस वर्णन पर संस्कृत का प्रभाव ज्यादा है। इसलिए पङ्क, कञ्चुअ, कण्ठअ, अन्तर सम्पइ प्राकृत में आ गए। लेकिन वास्तव में इन सभी के स्थानों पर केवल अनुस्वार ही होना चाहिए।

कुछ शब्द ऐसे हैं जिसके साथ अनुस्वार होने के बाद दीर्घ स्वर वर्ण का ह्रस्व हो जाता है। जैसे कि माला-मालं, नई-नइं, बहू-बहुं, इत्यादि।

अनुस्वार के विषय में केवल इतना ही समझना उचित है कि वर्गीय पंचम नासिक्य वर्ण और म् के बाद सभी जगह पर अनुस्वार होना ही ठीक है।

अनुनासिक वर्ण

प्राकृत में अनुनासिक वर्ण ज्यादा नहीं होता है। वर्गीय पंचम वर्ण तथा "म्" ही केवल अनुनासिक वर्ण के रूप में प्रचलित हो सकता है। इसका तात्पर्य यही है कि जहां हम लोग अनुनासिक वर्ण देखेंगे वहां हम लोग वर्गीय नासिक्य वर्ण की उपलब्धि करेंगे। किसी वर्ण के साथ इस तरह नासिक्य वर्ण के स्थान पर अनुनासिक वर्ण आ गया जैसे यमुना-जउँणा, चामुण्डा-चाउँण्डा, कामुक-काउँओ, अतिमुक्तक-अणिउँतय इत्यादि।

केवल शब्द में ही नहीं कोई विभक्ति में भी नासिक्य वर्ण के स्थान पर अनुनासिक वर्ण होता है। जैसे– हि, हिं, हिँ।

प्राकृत में नासिक्य वर्ण का प्रयोग ज्यादा नहीं होता है इसलिए ज्यादा शब्द भी नहीं मिलते हैं। लेकिन अपभ्रंश में ज्यादा नासिक्य ध्वनि मिलती हैं। जैसे-

अग्गिएँ उण्हउ होइ जगु वाएँ सीअलु तेवँ।
जो पुणु अग्गिं सीअला तसु उण्हत्तणु केवँ॥

विसर्ग

प्राकृत में विसर्ग कभी नहीं होता है। अर्थात् विसर्ग का प्राकृत में लोप होता है। विसर्ग की दो तरह की प्रतिक्रिया होती है–

१. जब अकारान्त शब्द के बाद विसर्ग होता है तो विसर्ग के स्थान पर ओ होता है। जैसे सर्वतः प्राकृत में सव्वओ होता है। नरः > णरो, प्रायः > पाओ इत्यादि।

२. अगर शब्द के बीच में विसर्ग होता है तो विसर्ग के स्थान पर जिस शब्द के पूर्व विसर्ग है उसका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वह वर्ण पुनः आ जाता है। जैसे दुःख। ख के पूर्व विसर्ग है इसलिए विसर्ग के स्थल पर ख का आगम अथवा ख का द्वित्व होता है। अर्थात् दुःख शब्द प्राकृत में दुक्ख होता है। प्राकृत में दो महाप्राण वर्ण का संयुक्त वर्ण नहीं होता है। इसलिए एक वर्ण का अल्पप्राण होगा क्योंकि दो महाप्राण वर्ण साथ-साथ उच्चारण करने में कठिनाई होती है। इसलिए एक वर्ण अल्पप्राण हो जाता है। साधारणतया प्रथम जो महाप्राण वर्ण होता है उसका ही अल्पप्राण हो जाता है। अतएव दुःख प्राकृत में दुक्ख होता है। यह नियम प्राकृत में सभी संयुक्त वर्ण पर लागू होता है।

कभी ऐसा लगता है कि कुछ विभक्तियां ऐसी हैं कि ओ संस्कृत का तस् (=तः) प्रत्यय से आया हुआ है। जैसे वच्छाओ वास्तव में संस्कृत वृक्षतः रूप से आया है। इसलिए पंचमी की एक विभक्ति है ओकारान्त। जैसे वच्छाओ।

३. ध्वनि-परिवर्तन

प्राकृत में ध्वनि का परिवर्तन दो तरह होता है। (१) स्वर का (२) व्यंजन का। स्वर में कुछ स्थलों पर ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ और दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व होता है। व्यंजन में भी कुछ-कुछ व्यंजन-ध्वनि का लोप होता है। कुछ-कुछ व्यंजन ध्वनि का परिवर्तन भी होता है। इस विषय में कुछ नियम सूत्र रूप में वर्णित हैं :-

(क) स्वर वर्ण का परिवर्तन

१. प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व वर्ण ह्रस्व होता है अर्थात् संयुक्त वर्ण का पूर्व अक्षर दीर्घ अर्थात् आ, ई, ऊ, होता है तब अ, इ, उ, हो जाता है।

यथा— (क) आ-अ-आम्रम्-अम्बं, ताम्रम्-तम्बं

(ख) ई-इ—मुनीन्द्रः मुणिन्दो, तीर्थम्-तित्थं

(ग) ऊ-उ—चूर्णः चुण्णो, ऊर्मि-उम्मि

२. यदि संयुक्त वर्ण का पूर्व वर्ण ए व ओ होता है तब ए व ओ का ह्रस्व रूप इ व उ होता है अर्थात् नरेन्द्रः-नरिन्दो, म्लेच्छः-मिलिच्छो। अधरोष्ठः—अहरुट्ठो, नीलोत्पलम्-नीलुप्पलं।

३. यदि संयुक्त वर्ण का पूर्व ए व ओ होता है तब उसी ए व ओ को हमलोग ह्रस्व मानेंगे अर्थात् संयुक्त वर्ण के पूर्व ए व ओं ह्रस्व हो जाते हैं। जैसे ग्राह्यं-गेज्झं, पिण्डं-पेंडं, तुण्ड-तोंडं, पुष्कर-पोक्खर। इन सभी उदाहरणों में यद्यपि ए, ओ लिखा गया है, पर ये ए, ओ ह्रस्व है। वस्तुतः ए, ओ दीर्घ है लेकिन संयुक्त वर्ण के साथ रहने के कारण ये हस्व हो गए हैं।

४. प्राकृत में संयुक्त वर्ण में एक का लोप होने पर पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा— पश्यति > पस्सइ > पासइ, कश्यपः > कस्सवो > कासवो, विश्रामः > विस्सामो > वीसामो, मिश्रम् > मिस्सं > मीसं, अश्वः > अस्सो > आसो, विश्वासः > विस्सासो > वीसासो, शिष्यः > सिस्सो > सीसो इत्यादि।

५. (क) ऋ वर्ण का प्राकृत में अ, इ, उ और रि होता है। यथ-ऋ>अ। घृतम्-घयं, तृणम्-तणं, कृतम्-कयं, वृषभः-वसहो, मृगः-मओ इत्यादि।

ऋ > इ । कृपा-किवा, हृदयम्-हियय़ं, भृङ्गारः-भिंगारो, श्रृगालः-सिआलो इत्यादि ।

ऋ > उ । ऋतुः-उऊ, पृष्ठः-पुट्ठो, पृथिवी-पुहई, वृतान्तः- वुत्तन्तो, वृन्दं वुंदं इत्यादि ।

ऋ > रि । ऋद्धिः- रिद्धि, ऋक्षः-रिच्छो, ऋषिः-रिसी आदि ।

(ख) कभी-कभी ऋ के स्थान पर आ, ए, और ढि भी होता है । यह नियम बहुत से शब्दों पर लागू नहीं है । लेकिन कुछ शब्दों पर इसका प्रभाव है । यथा-कृशा-कासा मृदुकं-माउक्कं, मृदुत्वं-माउक्कं, गृहं-गेहं, आदृत-आढिओ ।

(ग) संस्कृत का ऋकारान्त शब्द प्राकृत में तीन प्रकार का होता है । अर, आर और उ । संस्कृत पितृ शब्द प्राकृत में पिअर और पिउ होता है ।

६. प्राकृत में ऐ और औ के स्थान पर ए व ओ होता है । यथा-शैलः-सेलो, त्रैलोक्यं-तेलोक्कं, कैलाशः-केलासो, कौमुदी-कोमुई, यौवनं-जौव्वणं, कौशाम्बी-कोसम्बी ।

(ख) व्यंजन का नियम

७. पद के मध्य स्थित अथवा अनादि और असंयुक्त क-ग-च-ज-त-द-प-य-व प्राकृत में प्रायशः लोप होता है । यथा– (क)-तीर्थकरः तित्थयरो, लोकः-लोओ, शकटं-सअडं । (ग) नगः-नओ, नगरं-नयरं, मृगांकः-मयंको । (च) शची-सई, काचगृहः-कयग्गहो, (ज) रजतं-रययं, प्रजापतिः-पयावई, गजः-गओ । (त) वितानं-विआणं, रसातलं-रसाअलं, जातिः-जाई । (द) गदा-गया, मदनः-मयणो । (प) रिपुः-रिऊ, सुपुरुषः-सुउरिसो, (य) दयालुः-दआलू, दयालू, नयनं-नअणं-नयणं । (व) लावण्यम्-लायण्णं विबुधः-विउहो, वडवानलः-वलयाणलो ।

८. पद के मध्यस्थित अथवा अनादि और असंयुक्त ख-घ-थ-ध-भ प्राकृत में ह होता है। यथा–(ख) शाखा-साहा, मुखम्-मुहं, मेखला-मेहला, लिखति-लिहइ (घ) मेघः-मेहो, जघनम्-जहणं, माघः-माहो, (थ) नाथः-नाहो, मिथुनम्-मिहुणं, कथयति-कहेइ। (ध) साधुः-साहू, बाधः-वाहो, बधिरः-बहिरो (फ) मुक्ताफलम्-मुक्ताहलं। (भ) नभः-नह, स्वभावः-सहावो, शोभते-सोहइ।

९. पद के मध्यस्थित अथवा अनादि और असंयुक्त 'ट' को 'ड' हो जाता है। यथा–नटः-नडो, भटः-भडो, घटः-घडो, घटते-घडइ।

१०. पद के मध्यस्थित अथवा अनादि और असंयुक्त "ठ" को "ढ" हो जाता है। यथा–मठः-मढो, शठः-सढो, कमठः-कमढो, कुठारः-कुढारो, पठति-पढइ।

११. प्राकृत में पद के मध्यस्थित अथवा आदि असंयुक्त दन्त्य "न" मूर्धन्य "ण" हो जाता है। यथा– नरः-णरो, नदी-णई, नयति-णेइ, कनकम्-कणयं।

क) यदि आदि में दन्त्य "न" हो तो वही दन्त्य "न" वैसे ही रह सकता है अर्थात् आदि में दन्त्य "न" हो सकता है। इसलिए नदी-नई, णई, भी हो सकता है।

मन्तव्य :

वस्तुतः प्राकृत में आदि और अनादि, संयुक्त जैसे स्थलों पर मूर्धन्य "ण" होता है। अतएव प्राकृत में सभी स्थानों पर मूर्धन्य का ही प्रयोग करना चाहिए। किन्तु हेमचन्द्राचार्य के व्याकरण में लिखा है कि आदि दन्त्य "न" प्राकृत में हो सकता है। किन्तु अन्यान्य व्याकरण में लिखा है कि आदि और अनादि, संयुक्त और असंयुक्त सभी स्थलों पर मूर्धन्य "ण" होना चाहिए। हेमचन्द्राचार्य द्वारा जो कहा गया, उसके पीछे ऐतिहासिक विशेषता है। वस्तुतः अर्ध-मागधी भाषा में आदि स्थित दन्त्य "न" हो सकता है। इसी के साहित्य का प्रभाव प्राकृत भाषा पर भी आ गया। इसलिए सम्भवतः हेमचन्द्राचार्य ने ऐसा नियम बनाया है।

१२. प्राकृत में आदि य को ज होता है। यथा– यशः-जसो, यमः-जमो, याति-जाइ।

१३. प्राकृत में तालव्य "श" मूर्धन्य "ष" के स्थान पर दन्त्य "स" होता है। यथा–शब्दः-सद्दो, दश-दस, शोभते-सोहइ, कषायः-कसाओ, किन्तु मागधी प्राकृत में दन्त्य "स" के स्थान पर तालव्य "श" होता है। यथा मनुष्यः-मणुश्शो, पुरुषः-पुलिशो।

४. य-श्रुति

प्राकृत में य-श्रुति होती है। य-श्रुति की उत्पति किसी व्यंजन वर्ण के लोप के कारण से होती है। संस्कृत के आधार पर हम लोग जब विचार करते हैं तब देखते हैं कि कोई व्यंजन वर्ण जब अनादि अवस्था में होता है तब उसका कभी लोप होता है कभी नहीं भी होता है। जब लोप

होता है तब लोप के स्थान पर जो स्वर है उस स्वर का अवस्थान होता हैं। अर्थात् रह जाता है। जैसे काक अर्थात् क् + आ + क् + अ इस शब्द में जो द्वितीय क् है वह अनादि क् है। इसलिए वह अनादि क् प्राकृत में लोप हो जाएगा। लोप होने के बाद जो स्वर है अर्थात् यहां अ है वह रह जाएगा। यही नियम साधारणतया सभी जगह प्राकृत में है।

कौन से अनादि वर्ण का लोप होता है प्राकृत में इसके बारे में हेमचन्द्र के व्याकरण के अनुसार सब अनादि क, ग, च, ज, त, द, प, य, व, (क-ग-च-ज-त-द-प-य-वां प्रायो लुक् १.१७७) अर्थात् इस वर्ण का लोप होता है। यथा- काक-काअ, तीर्थकर-तीत्थअर, लोक-लोअ, नग-णअ, नगर-णअर, काचगृह-काअग्गह, गज-गय, वितान-विआण, यदि-जइ, मदन-मअण, रिपु-रिउ, दयालु-दआलु, विबुध-विउह इत्यादि।

जब अनादि क, ग, च, ज इत्यादि लोप होते हैं तब जिस स्वर का अवस्थान होता है वही स्वर रह जायेगा। किन्तु हेमचन्द्र ने बताया कि जब अ और आ के बाद जब अ रहेगा तब अ का उच्चारण य के जैसा होगा। अर्थात् उपर्युक्त उदाहरण ऐसा भी हो सकता है। यथा- काय, तित्थयर, लोय, णय, णयर, कायग्गह, गय, वियाण, मयण इत्यादि।

इकारान्त और उकारान्त शब्द के स्थान पर अ है तो वही अ य नहीं लिखा जाता है। यद्यपि कभी-कभी इकारान्त और उकारान्त शब्द के स्थान पर भी य आता है, वह य विकल्प रूप से कोई-कोई पण्डित लोग मान लेते हैं। वस्तुतः इकारान्त और उकारान्त शब्द के साथ य होना नहीं चाहिए। अगर होता है तो विशेष विधि से मान लेते हैं। सब ही प्राकृत व्याकरण के स्थान पर य-श्रुति मानी नहीं जाती है।

अतः य-श्रुति हम लोग जो देखते हैं वह मुख्यतः अर्धमागधी भाषा में होती है। अर्थात् वही भाषा में नअर जब लिखते हैं वही नअर अर्धमागधी में नयर रूप से होता है। इसका तात्पर्य यही है य लिखना श्रुति का कारण है अर्थात् अ और आ के बाद हम लोग जब पढ़ते हैं और बोलते हैं तब य की भाँति एक ध्वनि आ जाती है। उसी को ही हम लोग य-श्रुति कहते हैं। मुख्यतः य-श्रुति लिखने की नहीं है सुनने की है। हम यही तो सुनते है। वही जब लिखते हैं तब य देकर के लिखते हैं। अर्धमागधी में इसलिए इस श्रुति का प्रभाव ज्यादा से ज्यादा होता है।

य-श्रुति के विषय में केवल यही कहना है कि उपर्युक्त जो वर्ण है उसका लोप होने की बाद जो स्वर ध्वनि रह जाती है वहीं स्वर ध्वनि रहनी चाहिए। यो यह ध्वनि लगाना सुनने के कारण से होती है। शायद अर्धमागधी महावीर के समय में कथ्य भाषा के रूप में थी, इसलिए अर्धमागधी में सबसे ज्यादा इस श्रुति का प्रयोग होता है। य-श्रुति का यही निष्कर्ष है।

५. संधि

संधि प्राकृत में बहुत सरल है। संस्कृत की तरह ऐसी जटिल नहीं है। संस्कृत संधि के बहुत नियम प्राकृत में नहीं चलते हैं। प्राकृत में संधि के नियम निम्नलिखित प्रकार से हैं।

१. ह्रस्व और दीर्घ स्वर तथा दीर्घ और ह्रस्व स्वर मिलकर एक गोठीय दीर्घ स्वर होते हैं। अर्थात् अ + अ / अ + आ अथवा आ + आ / आ + अ-आ होता है। इ + इ / इ + ई अथवा ई + इ / ई + ई = ई होती है। उ + उ / उ + ऊ अथवा ऊ + उ / ऊ + ऊ-ऊ होता है। उदाहरण के तौर पर—देव + आलय=देवालय। चक्क + आअ = चक्काअ। इसि + इसि = इसीसि। सु + उरिस = सूरिस।

२. प्राकृत में अ / आ + इ / ई और अ / आ + उ / ऊ दोनों मिलकर क्रमशः ए और ओ होते हैं। जैसे– दिन + ईस = दिनेस, पुहवी + ईस = पुहवीस, अन्त + उवरि = अन्तोवरि।

२. क) किन्तु जब एकार और ओकार के बाद संयुक्त वर्ण रहता है, तब एकार के स्थान पर "इ" और ओकार के स्थान पर "उ" होता है। यथा- दणुअ + इंद=दणुएंद, दणु-इंद। णह + उल्लिहण = णहोल्लिहण, णहुल्लिहण।

मन्तव्य : एकार और ओकार का ह्रस्व रूप इकार और उकार होता है। इसलिए संयुक्त वर्ण के पहिले एकार और ओकार क्रमशः इकार और उकार हो गया। अगर संयुक्त वर्ण के पहिले एकार और ओकार रहेंगे तब वही एकार और ओकार के ह्रस्व माने जाते हैं अर्थात् वही ए व ओ का हम लोग प्राकृत में ह्रस्व मानते हैं। यथा- पिंड-पेंड, तुंड-तोंड़। ये ए और ओ प्राकृत में ह्रस्व हैं। यद्यपि ए और ओ का वास्तविक रूप दीर्घ ही है।

३. प्राकृत में संधि का निषेध–

दो भिन्न स्वरों की संधि प्राकृत में नहीं होती है। अर्थात् ई + अ / आ, इ / ई + उ / ऊ और उ / ऊ + इ / ई, उ / ऊ + ए / ओ इस तरह की संधि प्राकृत में नहीं होती है। यथा- दणुइंद, वहआइ, अहो अच्छरिअ, सज्झावहु-अवऊदा इत्यादि।

४. विकल्प से संधि–

एक पद के अन्त और दूसरा पद के प्रारम्भ में जो स्वर वर्ण हैं वे स्वर वर्ण एक नम्बर नियम के अनुसार हों तब विकल्प से संधि हो सकती है। यथा- वास + इसि = वासेसि, अथवा वासइसि। विसम + आयवो = विसमायवो अथवा विसमआयवो। दहि + ईसरो = दहीसरो अथवा दहिईसरो, साउ + उअयं = साऊअयं अथवा साउउअयां।

५. शब्द के बीच में यदि कोई व्यंजन वर्ण का लोप हो तो उसके बाद जो स्वर रह जाता है उस स्वर के साथ उसी पद में जो दूसरा स्वरवर्ण है उसकी संधि विकल्प से कदाचित् देखी जाती है। यथा- सु + उरिसो = सूरिसो। इस तरह संधि प्राकृत में उचित नहीं है। लेकिन कभी-कभी होती है।

६. क्रिया में व्यंजन के लोप के कारण से जो स्वर रह जाता है उसके साथ परवर्ती स्वर की संधि नहीं होती है।

वस्तुतः प्राकृत में दो स्वर वर्ण का अवस्थान पास-पास हो तो तब भी उसको संधि की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए प्राकृत में संधि के सभी नियम वस्तुतः विकल्प से हैं।

६. संयुक्त वर्ण के नियम

प्राकृत में दो विसदृश व्यंजन वर्ण कभी संयुक्त नहीं होते हैं। केवल अपने-अपने वर्णों के साथ सन्धि हो सकती है अर्थात् एक ही वर्ग के साथ एक ही वर्ग की सन्धि और स स, ल ल, य य के साथ भी संधि हो सकती है।

संस्कृत में भिन्न वर्ग की संधि हो सकती है पर इस प्रकार से प्राकृत में संधि नहीं होती है। इस विषय में कुछ नियम इस प्रकार है–

क) संयुक्त वर्ण का पहला वर्ण जब क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स होता है तो उनका लोप होता है। यथा–

क– भूक्तम-भूत्तं, सिक्तम्-सित्थं

ग– दुग्धम्-दुद्धं, मुग्धम्-मुद्धं

ट– षट्पदः-छप्पओ, कट्फलम्-कप्फलं

ड– खड्गः-खग्गो, षड्जः-सज्जो

त– उत्पलम्-उप्पलं, उत्पादः-उप्पाओ

द– मद्गुः-मग्गू, मुद्गरः-मोग्गरो

प– सुप्तः-सुत्तो, गुप्तः-गुत्तो

श– श्लक्ष्णम्-लण्हं, निश्चलः-णिच्चलो

ष– गोष्ठी-गोट्ठी, षष्ठः-छट्ठो, निष्ठुरः-निट्ठुरो

स– स्खलितः-खलिओ, स्नेहः-नेहो

ः– दुःखम्-दुक्खं, अंतःपातः-अंतप्पाओ

ख) प्राकृत में संयुक्त वर्ण जब, ब, ल, व, र होता है तब उसका लोप हो जाता है। यथा–

ब– शब्दः-सद्दो, अब्दः-अद्दो, लुब्धकः-लोद्धओ।

ल– उल्का-उक्का, वल्कलम्-वक्कलं, विक्लवः-विक्कओ।

व– पक्वम्-पिक्कं, ध्वस्तः-धत्थो।

र– अर्कः-अक्को, वर्गः-वग्गो, रात्रिः-रत्ती।

ग) प्राकृत में संयुक्त वर्ण का द्वितीय वर्ण जब, म, न, य होता है तब म, न, य का लोप हो जाता है। यथा–

म– युग्मम्-जुग्गं, रश्मिः-रस्सी, स्मरः-सरो।

न– नग्नः-नग्गो, लग्नः-लग्गो।

य– श्यामः-सामा, कुड्यम्-कुड्डं।

घ) प्राकृत में संयुक्त वर्ण का एक वर्ण लोप होने पर जो शेष है उसका द्वित्व होता है। परन्तु आदि में जब कोई लोप होगा तब उसका द्वित्व नहीं होता है। यथा– क्षमा-खमा, स्कन्धः-खन्धो।

ङ) प्राकृत में दो महाप्राण वर्ण ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ का संयुक्त वर्ण नहीं होता है। उसमें प्रथम महाप्राण वर्ण अल्पप्राण होता है।

यथा– अक्षमः-अखमो-अक्खमो, ऐसा सर्वत्र होता है ।

च) प्राकृत में क्ष्म, श्म, ष्म, स्म, ह्म को म्ह होता है । यथा–

क्ष्म– पक्ष्मन् - पम्हाइं

श्म– कुश्मानः-कुम्हाणो, कश्मीराः-कम्हारा ।

ष्म– ग्रीष्मः-गिम्हो, ऊष्मा-उम्हा ।

स्म– अस्मादृशः अम्हारिसो, विस्मयः-विम्हओ ।

ह्म– ब्रह्मा-बम्हा, सुह्मा–सुम्हा, ब्राह्मणः - बम्हणो ।

छ) प्राकृत में श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, क्ष्ण को ण्ह होता है । यथा–

श्न– प्रश्नः-पण्हो

ष्ण– विष्णुः - विण्हू

स्न– ज्योत्स्ना-जोण्हा

ह्न– वह्निः-वण्ही

ह्ण– पूर्वाह्णः-पुव्वण्हो

क्ष्ण– तीक्ष्णं-तिण्हं ।

रूप-तत्त्व

(Morphology)

७. विशेष्य :

विशेष्य का प्राकृत में सविभक्ति रूप होता है । जिसको हम शब्दरूप कहते हैं । विशेष्य का वचन, लिंग, कारक, विभक्ति और शब्दरूप होता है।

वचन

प्राकृत में केवल दो वचन है– एकवचन और बहुवचन । संस्कृत का द्विवचन प्राकृत में नहीं होता है । उसकी जगह पर बहुवचन होता है ।

(द्विवचनस्य बहुवचनम् (हे. ३.१३०)।

लिंग

साधारणतया संस्कृत के अनुसार प्राकृत में भी तीन लिंग होते हैं । यथा- पुलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग । किन्तु कुछ-कुछ ऐसे शब्द हैं जिसमें संस्कृत लिंग का अनुसरण प्राकृत में नहीं होता है । जैसे संस्कृत में तरणि शब्द स्त्रीलिंग होता है किन्तु प्राकृत में पुलिंग होता है (यथा, एस तरणी)। इस तरह प्रावृट् शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग है प्राकृत में पुलिंग है (यथा, पाउसो) । इसका मार्गदर्शन तत्तत् स्थल पर दिखायेंगे ।

कारक

संस्कृत के अनुसार प्राकृत में भी छ कारक है। विशेषता यही है कि सम्प्रदान के लिए केवल षष्ठी विभक्ति होती है। जिस कारण से संस्कृत में जो-जो कारक होता है उसी ढंग से प्राकृत में भी होता है। यद्यपि संस्कृत की नियमावली सर्वत्र नहीं चलती है तब भी हम तो उसे संस्कृत नियमावली (आप यदि जानेंगे तो उसी) से काम चला सकते हैं।

कारक विभक्ति

प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति नहीं होती हैं। इसलिए प्राकृत में सात विभक्तियाँ हैं। चतुर्थी के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होगी। संस्कृत के अनुसार प्राकृत में विभक्ति नहीं हैं। प्राकृत में विभक्ति की उत्पत्ति संस्कृत से अलग होती है। प्राकृत में विभक्ति का स्वरूप निम्नलिखित हैं–

विभक्ति		एकवचन		बहुवचन
प्रथमा	सु	ओ	जस्	विभक्ति का लोप, आ
द्वितीया	अम्	अनुस्वार (.)	शस्	” ” ए
तृतीया	टा	ण, णं (णा)	भिस्	हि, हिं, हिँ
चतुर्थी	ङे	– –	भ्यस्	– –
पंचमी	ङसि	त्तो,ओ,उ, हि,हिंतो	”	त्तो,ओ,उ,हि, हिंतो,सुंतो
षष्ठी	ङस्	स्स	आम्	ण, णं
सप्तमी	ङि	ए, म्मि	सुप्	सु, सुं
सम्बोधन	सु	लोप,या प्रथमा की तरह	जस्	प्रथमा की तरह

शब्द रूप

प्राकृत में दो तरह के शब्द होते है :- एक है स्वरान्त और दूसरा है व्यन्जनान्त।

स्वरान्त शब्द केवल अ, आ, इ, ई, उ, ऊ हो सकता है क्योंकि एकारान्त तथा ओकारान्त शब्द प्राकृत में नहीं आते हैं। इसलिए केवल अकारान्त,

आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त शब्द ही प्राकृत में मिलते हैं।

प्राकृत में ऋ, ॠ और लृ नहीं हैं इसलिए ऋकारान्त शब्द प्राकृत में अर, आर और कभी-कभी उकार भी होते हैं।

प्राकृत में व्यंजनान्त शब्द नहीं होता है। इसलिए व्यंजनान्त शब्द भी स्वरान्त हो जाते हैं।

शब्द पुलिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग होता है। लेकिन विभक्ति प्रयोग में उन लिंगों की भिन्नता नहीं पायी जाती है। केवल नपुंसकलिंग की प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति में अलग विभक्तियाँ लगती हैं। ऐसा स्त्रीलिंग शब्द में भी अलग विभक्तियाँ लगती हैं। नीचे शब्द के शब्दरूप दे रहा हूं।

अकारान्त पुलिंग शब्द का रूप

वच्छ < वृक्ष, वत्स

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वच्छो	वच्छा
द्वितीया	वच्छं	वच्छे, वच्छा
तृतीया	वच्छेण-वच्छेणं	वच्छेहि, वच्छेहिँ, वच्छेहिं
चतुर्थी	–	–
पंचमी	वच्छा, वच्छत्तो, वच्छाओ वच्छाउ, वच्छाहिं, वच्छाहिंतो	वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ, वच्छेहि, वच्छाहिंतो, वच्छेहिंतो वच्छासुंतो, वच्छेसुंतो
षष्ठी	वच्छस्स	वच्छाण-णं
सप्तमी	वच्छे, वच्छम्मि	वच्छेसु, वच्छेसुं
सम्बोधन	वच्छ, वच्छा, वच्छो	वच्छा

इकारान्त पुलिंग शब्द का रूप
गिरि

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गिरी	गिरी, गिरओ, गिरउ, गिरिणो
द्वितीया	गिरिं	गिरी, गिरिणो
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	गिरिणो, गिरित्तो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंतो	गिरित्तो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंतो, गिरीसुंतो
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण-णं
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु-सुं
सम्बोधन	गिरि, गिरी	गिरिणो, गिरओ, गिरउ, गिरी

उकारान्त पुलिंग शब्द का रूप
तरु

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तरू	तरू, तरवो, तरओ, तरउ, तरुणो
द्वितीया	तरुं	तरू, तरुणो
तृतीया	तरुणा	तरूहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	तरुणो, तरुत्तो, तरूओ, तरूउ, तरूहिंतो	तरुत्तो, तरूओ, तरुउ तरूहिंतो, तरूसुंतों
षष्ठी	तरुणो, तरुस्स	तरूण, -णं
सप्तमी	तरुम्मि	तरूसु-सुं
सम्बोधन	तरु, तरू	तरू, तरुणो, तरवो, तरउ, तरओ

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का रूप
माला

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	माला	माला, मालाओ, मालाउ
द्वितीया	मालं	माला, मालाओ, मालाउ
तृतीया	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	मालाअ, मालाइ, मालाए मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिंतो, मालासुंतो
षष्ठी	मालाअ, मालाइ, मालाए	मांलाण-णं
सप्तमी	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालासु-सुं
सम्बोधन	माले, माला	माला, मालाओ, मालाउ

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का रूप
लता

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लया	लया, लयाओ, लयाउ
द्वितीया	लयं	लया, लयाओ, लयाउ
तृतीया	लयाअ, लयाइ, लयाए	लयाहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	लयाअ, लयाइ, लयाए लयत्तो, लयाओ, लयाउ, लयाहिंतो	लयत्तो, लयाओ, लयाउ, लयाहिंतो-लयासुंतो
षष्ठी	लयाअ, लयाइ, लयाए	लयाण-णं
सप्तमी	लयाअ, लयाइ, लयाए	लयासु-सुं
सम्बोधन	लये, लया	लया, लयाओ, लयाउ

इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का रूप
बुद्धि

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धिं	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ बुद्धीए	बुद्धीहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धीउ, बुद्धीओ, बुद्धित्तो, बुद्धीहिंतो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धिहिंतो-सुंतो
षष्ठी	बुद्धीअ-आ-इ-ए	बुद्धीण-णं
सप्तमी	बुद्धीउ-आ-इ-ए	बुद्धीसु-सुं
सम्बोधन	बुद्धि, बुद्धी	बुद्धी, बुद्धिओ, बुद्धीउ

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का रूप
नई

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	नई	नई, नईओ, नईउ
द्वितीया	नइं	नई, नईओ, नईउ
तृतीया	नईअ, नईआ, नईइ, नईए	नईहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	नईअ, नईआ, नईओ, नइत्तो, नईइ, नईउ-हिंतों	नइत्तो, नईओ-उ-हिंतो-सुंतो
षष्ठी	नईअ, आ-इ-ए	नईण-णं
सप्तमी	नईअ, आ-इ-ए	नईसु-सुं
सम्बोधन	नइ, नई	नई, नईओ, नईउ

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का रूप
धेणु

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
द्वितीया	धेणुं	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
तृतीया	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए	धेणूहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए, धेणूओ, धेणुत्तो, धेणूहिंतो	धेणुत्तो, धेणूओ, धेणूउ, धेणूहिंतो, धेणूसंतो
षष्ठी	धेणूअ-आ-इ-ए	धेणूण-णं
सप्तमी	धेणूअ-आ-इ-ए	धेणूसु-सुं
सम्बोधन	धेणु, धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का रूप
वहू

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वहू	वहू, वहूओ, वहूउ
द्वितीया	वहुं	वहू, वहूओ, वहूउ
तृतीया	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए	वहूहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	वहूअ, वहूआ, वहूइ, वहूए, वहूओ, वहुत्तो, वहूहिंतो	वहुत्तो, वहूओ, वहूउ, वहूहिंतो, वहूसंतो
षष्ठी	वहूअ-आ-इ-ए	वहूण-णं
सप्तमी	वहूअ-आ-इ-ए	वहूसु-सुं
सम्बोधन	वहु, वहू	वहू, वहूओ, वहूउ

कुछ शब्द का विशेष रूप

पिउ, पिअर शब्द

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिआ, पिअरो	पिअरा, पिअवो, पिअओ, पिअउ, पिउणो, पिऊ
द्वितीया	पिअरं	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
तृतीया	पिअरेण-णं, पिउणा	पिअरेहि-हिं-हिँ, पिऊहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि-हिंतो, पिअरा, पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिंतो, पिऊ	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिंतो पिअरेहिंतो, पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो
षष्ठी	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स	पिअराण-णं, पिऊण-णं
सप्तमी	पिअरे, पिअरम्मि	पियरेसु-सुं, पिऊसु-सुं
सम्बोधन	पिअर, पिअरो, पिअरा, पिअरं, पिअ, पिउ, पिऊ	पिअरा, पिउणो, पिऊ

भत्तार शब्द

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	भत्तारो	भत्तारा, भत्तू, भत्तुणो
द्वितीया	भत्तारं	भत्तारा, भत्तारे, भत्तू, भत्तुणो
तृतीया	भत्तारेण-णं, भत्तुणा	भत्तारेहि-हिं-हिँ, भत्तूहि-हिं-हिँ

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
चतुर्थी	–	–
पंचमी	भत्तारा, भत्तारत्तो, भत्तारओ, भत्तारउ, भत्तारहिंतो, भत्ताराहि, भत्तुणो, भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहिंतो, भत्तू	भत्तारत्तो, भत्तारओ, भत्तारउ, भत्ताराहि, भत्ताराहि, भत्तारहिंतो भत्तारेहिंतो, भत्तारसुंतो भत्तारेसुंतो, भत्तुत्तो, भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहिंतो, भत्तूसुंतो
षष्ठी	भत्तारस्स, भत्तुणो, भत्तुस्स	भत्ताराण-णं, भत्तूण-णं
सप्तमी	भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि	भत्तारेसु-सुं, भत्तूसु-सुं
सम्बोधन	भत्तार, भत्तारो, भत्तारा, भत्तु, भत्तू	भत्तारा, भत्तू, भत्तुणों

राजन्-राय

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	राया	राया, रायाणो, राइणो
द्वितीया	रायं, राइणं	राये, राया, रायाणो, राइणो
तृतीया	राइणा, रण्णा, राएण-णं	राएडि-हिं-हिँ, राईहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	–	–
पंचमी	रण्णो, राइणो, रायत्तो	रायत्तो, राइत्तो
षष्ठी	रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण-णं, रायाण-णं
सप्तमी	राये, रायम्मि, राइम्मि	राईसु-सुं, राएसु-सुं
सम्बोधन	राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

आत्मन्–अप्पा, अत्ता

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अत्ता, अप्पा, अप्पाणो	अत्ता, अत्ताणो, अप्पा, अप्पाणो
द्वितीया	अत्तं, अप्पं, अप्पाणं	अप्पाणो, अप्पाणे, अप्पाणा
तृतीया	अत्तणा, अप्पणा, अत्तणेण, अप्पाणेण	अत्तेहि, अत्तेहिं, अप्पेहि, अप्पेहिं अप्पाणेहि, अप्पाणेहिं
चतुर्थी	–	–
पंचमी	अत्ता, अत्ताओ, अत्ताउ, अप्पा, अप्पाणाहि, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाणा, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ	अत्ताहिंतो, अत्तासुंतो, अत्ताहि, अप्पाहि, अप्पाहिंतो, अप्पासुंतो अप्पाणा-अप्पाणो, अप्पाउ, अप्पाणेहिंतो, अप्पाणेसुंतो
षष्ठी	अत्तस्स, अत्तणो, अप्पस्स अप्पणो	अत्ताण-णं, अप्पाण-अप्पाणं, अप्पाणाण-अप्पाणाणं
सप्तमी	अत्ते, अत्तम्मि, अप्पे अप्पम्मि, अप्पाणो अप्पाणम्मि	अत्तेसु-सुं, अप्पेसु-सुं अप्पाणेसु-सुं
सम्बोधन	अत्तं, अत्त, अप्पं, अप्प अप्पाण	अत्ता, अत्ताणो, अप्पा, अप्पाणो, अप्पाणा

८. विशेषण (Adjective)

प्राकृत में भी विशेषण विशेष्य का अनुसरण करते हैं। विशेष्य में जो लिंग, वचन, कारक और कारक-विभक्ति होती है विशेषण में भी वही होता

है। इसलिए विशेषण का रूप विशेष्य की तरह होता है।

विशेषण साधारणतः उत्कर्ष और निकृष्ट वाचक और संख्यावाचक शब्द होता है। जब दो वस्तुओं में तुलना कर एक वस्तु को दूसरी से न्यून या अधिक बताना होता है तो उस विशेषण में तर या ईयस् प्रत्यय जोड़ा जाता है। एक से अधिक वस्तुओं में से किसी एक को सबसे उत्कृष्ट या न्यून बतलाने के लिए विशेषण में तम अथवा इष्ठ प्रत्यय लगाया जाता है।

प्राकृत में संस्कृत की तरह तर, तम अथवा ईयस्, इष्ठ प्रत्यय जोड़ा जाता है। लेकिन जोड़ने के बाद शब्द प्राकृत के नियम के अनुसार परिवर्तित होते हैं। ये तुलनामूलक रूप निम्नलिखित प्रकार से होते हैं।

	दो के मध्य तुलना Comparative Degree		दो से अधिक के मध्य तुलना Superlative Degree
(१) तर > यर	अणिट्ठयर कतयर	तम > यम	अणिट्ठयम कतयम
(२) ईयस्	श्रेयस् > सेय कनीयस् > कणीयस पापीयस् > पापीयस	इष्ठ	श्रेष्ट > सेट्ठ कनिष्ठ > कणिट्ठ ज्येष्ठ > जेट्ठ पापिष्ठ > पाविट्ठ

संख्या वाचक शब्द

१. एअ / एग
एआ
एअं
२. दो / दुवे / दोण्णि
३. तओ / तिण्णि
४. चत्तारो / चउरो / चत्तारि
५. पंच
६. छ
७. सत्त
८. अट्ठ
९. नव
१०. दस / दह
११. एक्कारस / एआरह
१२. दुवालस / बारस
१३. तेरह
१४. चउद्दह

१५. पंचरह / पण्णरस
१६. सोलस
१७. सत्तरस
१८. अट्ठारस
१९. एगूणवीस/अउणवीसइ/अउणवीस
२०. वीस / वीसइ
२१. एक्कवीस
२२. बावीस
२३. तेवीस
२४. चउवीस
२५. पणवीस
२६. छब्बीस
२७. सतावीस
२८. अट्ठावीस
२९. अउणतीस
३०. तीस
३१. एगतीस
३२. बत्तीस
३३. तेत्तीस
३४. चउत्तीस
३५. पणतीस
३६. छत्तीस
३७. सत्ततीस
३८. अट्ठतीस
३९. एगूणचत्तालीस
४०. चत्तालीस
४१. एगचत्तालीस
४२. बायालीस
४३. तेयालीस
४४. चउयालीस
४५. पणयालीस
४६. छायालीस
४७. सीयालीस
४८. अट्ठयालीस
४९. एगूणपन्न
५०. पन्नास
५१. एगावन्न
५२. बावन्न
५३. तेवन्न
५४. चउवन्न
५५. पणवन्न
५६. छव्वन्न
५७. सत्तावन्न
५८. अट्ठावन्न
५९. एगूणसट्ठि
६०. सट्ठि
६१. एगट्ठि
६२. वासट्ठि
६३. तेसट्ठि
६४. चउसट्ठि
६५. पणसट्ठि
६६. छासट्ठि
६७. सत्तसट्ठि
६८. अट्ठसट्ठि
६९. एगूणसत्तरि
७०. सत्तरि
७१. एक्कसत्तरि
७२. बावत्तरि
७३. तेवत्तरि
७४. चोवत्तरि
७५. पंचहत्तरि
७६. छावत्तरि
७७. सत्तहत्तरि
७८. अट्ठहत्तरि
७९. एगूणासीइ
८०. असीइ
८१. एक्कासीइ
८२. बाईसि

८३. तेसीइ
८४. चउरासीइ
८५. पंचासीइ
८६. छलसीइ
८७. सत्तासीइ
८८. अट्ठासीइ
८९. एगूणनउइ
९०. नउइ
९१. एक्काणउइ
९२. बेणउइ
९३. तेणउइ
९४. चउणउइ
९५. पंचाणउइ
९६. छन्नउइ
९७. सत्ताणउइ
९८. अट्ठाणउइ
९९. नउणउइ
१००. सय
१०००. सहस्स

संख्यावाची शब्द के रूप

	एक एकवचन	दो बहुवचन	तीन बहुवचन	चार बहुवचन	पांच बहुवचन
प्रथमा	एओ एअं, एआ	दो, दुवे, दोण्णि	तओ, तिण्णि	चत्तारो, चउरो, चत्तारि	पंच
द्वितीया	एअं एअं एअं	दो, दुवे, दोण्णि	तओ, तिण्णि	चत्तारो, चउरो, चत्तारि	पंच
तृतीया	एएण एआए	दोहि, दोहिं	तीहि, तीहिं	चउहि, चउहिं	पंचहि, पंचहिं
चतुर्थी	×	×	×	×	×
पंचमी	एआओ	दोहिओ	तीहिंतो	चउहिंतो	पंचहिंतो
षष्ठी	एअस्स एआए	दोण्हं	तिण्हं	चउण्हं	पंचण्हं
सप्तमी	एअम्मि, एआए, एअंसि	दोसु	तीसु	चउसु	पंचसु
संबोधन	×	×	×	×	×

पूरक संख्या वाची शब्द

First- पढम, Second- बीय, बिइय, दोच्च, Third- तइय, तच्च, Fourth- चउत्थ, Fifth- पंचम, Sixth- छट्ठ, Seventh- सत्तम, Eighth- अट्ठम् Nineth- नवम, Tenth- दसम, Twentieth- वीसइम।

९. सर्वनाम शब्दरूप

अस्मद्—अम्ह

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहं, अहयं, हं, अम्मि, अम्हि, म्मि	वयं, मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो, भे
द्वितीया	मं, ममं, मिमं, मि, णे, णं, अम्मि, अम्ह, मम्ह, अहं	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
तृतीया	मइ, मए, मयाइ, ममं ममए, ममाइ, मि, मे, णे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे
चतुर्थी	—	—
पंचमी	मइत्तो, ममत्तो, महत्तो मज्झत्तो, मत्तो	ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहिन्तो अम्हाहिन्तो, ममासुंतो ममेसुंतो, अम्हासुंतो, अम्हेसुंतो
षष्ठी	मम, मे, मइ, मह, महं मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्झाण
सप्तमी	मि, मे, मइ, मए, ममाइ अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि	अम्हेसु, ममेसु, महेसु, मज्झेसु अम्हसु, ममसु, महसु, मज्झसु अम्हासु

युष्मद्

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह	भे, तुब्भे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे
द्वितीया	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह तुमे, तुए	वो, तुब्भे, तुज्झ, तुय्हे, उय्हे, भे
तृतीया	भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुय्हेहिं, तुज्झेहिं उय्हेहिं, तुय्हेहिं, उज्झेहिं
चतुर्थी	—	—
पंचमी	तइत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो, तुब्मा, तुब्मत्तो, तुय्हत्तो, उय्हत्तो, उम्हत्तो, तुज्झत्तो, तुम्हत्तो, तुहत्तो	तुब्भत्तो, उय्हत्तो, उम्हत्तो, तुय्हत्तो, तुम्हत्तो, तुज्झत्तो
षष्ठी	तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह, तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ	तु, वो, भे, तुब्भ, तुब्भं, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुब्भाणं, तुवाणं, तुमाणं, तुय्हाणं तुम्ह, तुज्झ, तुम्हाण-णं, तुज्झाण-णं
सप्तमी	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तु, तुव, तुम, तुह तुब्भा, तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि	तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुब्भेसु, तुम्हेसु, तुज्झेसु, तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुज्झसु, तुब्भासु, तुम्हासु, तुज्झासु

तद्-स, त पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	स, सो	ते, णे
द्वितीया	तं, णं	ते, ता, णे, णा
तृतीया	तेण, तिणा, णेण	तेहि, तेहिं, तेहिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	तत्तो, तओ, तो, तम्हा	ताहिंतो, तासुंतो
षष्ठी	तस्स, तास, से	तेसिं, ताण-णं, सिं
सप्तमी	तस्सिं, तम्मि, तत्थ, तहिं ताहे, तइआ	तेसु-सुं, णेसु-सुं
संबोधन	—	—

तद्-सा, ता स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ताओ, ताउ, तीओ, तीउ
द्वितीया	तं	ताओ, ताउ, तीओ, तीउ
तृतीया	ताइ, ताए, तीइ, तीए तीअ, तीआ, तीणा	ताहि, ताहिं, तीहि, तीहिं
चतुर्थी	—	—
पंचमी	ताओ, ताउ, तीओ, तीउ	ताहिंतो, तासुंतो, तीसुंतों, तहिंतो
षष्ठी	तस्सा, तिस्सा, तासे, तीसे ताए, ताइ, तीए, तींइ तीअ, तीआ, से	तासां, तेसिं, तासि, तीसिं, ताण-णं, तीण-णं, सि
सप्तमी	ताए, ताइ, तीए, तीइ, तीअ, तीआ, ताहे, तइआ	तासु-सुं, तीसु-सुं
संबोधन	—	—

तद्-तं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तं	ताइ, ताइं, ताणि
द्वितीया	तं	ताइ, ताइं, ताणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुलिंग के समान

इदम्-इम पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमो	इमे
द्वितीया	इमं	इमे
तृतीया	इमेण, इमिणा	इमेहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	इमाओ, इमाउ, इमाहि	इमाहिंतो, इमासुंतो
षष्ठी	इमस्स, अस्स	इमाण-णं, इमेसिं
सप्तमी	इमस्सिं, इमम्मि, अस्सिं	इमेसु-सुं
सम्बोधन	×	×

इदम्-इमा स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा	इमा, इमाओ, इमाउ
द्वितीया	इमं	इमा, इमाओ, इमाउ
तृतीया	इमाइ, इमाए	इमाहि-हिं
चतुर्थी	×	×
पंचमी	इमाअ, इमाइ, इमाए, इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिंतो	इमत्तो, इमाओ, इल्माउ, इमाहिंतो-सुंतो
षष्ठी	इमाअ, इमाइ, इमाए	इमाण-णं
सप्तमी	इमाअ-इ-ए	इमासु-सुं
सम्बोधन	×	×

इदम्-इयं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
एकवचन	इअं, इणं, इणमो	इमाइ, इमाइं, इमाणि
बहुवचन	इअं, इणं, इणओ	इमाइ-इं-णि

एतद्-एअ पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, एसो	एए
द्वितीया	एअं	एए
तृतीया	एएण, एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	एत्तो, एआओ, एआउ एआहि	एआहिंतो, एआसुंतो
षष्ठी	एअस्स	एआण-णं, एएसिं
सप्तमी	एअस्सिं,एअम्मि, एत्थ, इत्थ	एएसु-सुं
संबोधन	×	×

एतद्-एआ स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एसा	एआओ, एआउ
द्वितीया	एअं	एआओ, एआउ
तृतीया	एआए	एआहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	एआअ, एआइ, एआए, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिंतो	एअत्तो, एआओ, एआउ एआहिंतो-सुंतो
षष्ठी	एआअ, एआइ, एआए	एआण-णं
सप्तमी	एआअ, एआइ, एआए	एआसु-सुं
संबोधन	×	×

एतद्-एअं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एअं	एआइ, एआइं, एआणि
द्वितीया	एअं	एआइ, एआइं, एआणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुलिंगवत्

अदस्-अमु पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू, अह	अमूओ, अमुणो
द्वितीया	अमुं	अमू, अमुणो
तृतीया	अमुणो	अमूहिं, अमूहिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	अमूओ, अमूउ, अमूहि	अमुहिंतो, अमूसुंतो
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स	अमूण-णं
सप्तमी	अमुस्सिं, अमुम्मि, अमुत्थ	अमूसु-सुं
संबोधन	×	×

अदस्-अमु स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमू, अह	अमू, अमूओ, अमूउ
द्वितीया	अमुं	अमू, अमूओ, अमूउ
तृतीया	अमूए, अमूइ, अमूअ, अमूआ	अमूहि, अमूहिं
चतुर्थी	×	×
पंचमी	अमूओ, अमूउ, अमूहि	अमूहिंतो, अमुसुंतो
षष्ठी	अमूए, अमूइ, अमूअ, अमूआ	अमूण, अमूणं
सप्तमी	अमूए, अमूइ, अमूअ, अमूआ	अमूसु, अमूसुं
संबोधन	×	×

अदस्-अमु नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमुं, अह	अमूइ, अमूइं, अमूणि
द्वितीया	अमुं	अमूइ, अमूणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुलिंगवत्

यद्-ज पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जो, जे	जे
द्वितीया	जं	जे, जा
तृतीया	जेण, जेणं	जेहि, जेहिं, जेहिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	जम्हा, जाओ, जाउ	जाओ, जाउ, जाहि, जेहि, जाहिम्तो, जासुंतो, जेसुंतो
षष्ठी	जस्स, जास	जेसिं, जाण, जाणं
सप्तमी	जंसि, जस्सिं, जहिं, जम्मि जत्थ	जेसु, जेसुं, जाहे, जाला, जइआ
संबोधन	×	×

यद्-जा स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जा	जा, जाओ, जाउ
द्वितीया	जं	जा, जाओ, जाउ
तृतीया	जाअ, जाइ, जाए	जाहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	जाअ, जाइ, जाए, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिंतो-सुंतो
षष्ठी	जाअ, जाइ, जाए	जाण-णं
सप्तमी	जाअ, जाइ, जाए	जासु-सुं
संबोधन	×	×

यद्-ज नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जं	जाणि, जाइं, जाइँ
द्वितीया	जं	जाणि, जाइं, जाइ

शेष सभी रूप पुलिंग "ज" के समान चलते हैं।

किम्-क पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	कं	के
तृतीया	केण, किणा	केहि, केहिं
चतुर्थी	×	×
पंचमी	कओ, कत्तो	काहिंतो, कासुंतो
षष्ठी	कस्स, कास	काण, काणं, केसिं
सप्तमी	कस्सिं, कम्मि, कत्थ, कहिं, कस्सि	केसु, केसिं
संबोधन	×	×

किम्-का स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	काओ, काउ, कीओ, कीउ
द्वितीया	कं	काओ, काउ, कीओ, कीउ
तृतीया	काए, काइ, कीए, कीअ, क़ीआ	काहि, कीहिं, कीहिं,कीहिं
चतुर्थी	×	×
पंचमी	काओ, काउ, कीओ, कीउ, कीण	काहिंतो, कासुंतो, कीहिंतो, कीसुंतो
षष्ठी	कस्सा, किस्सा, कासे, कीसे, कीइ, कीअ, कीआ, काइ, काए	कासां, केसिं, कासिं, काणं काण, कीणे, कीण
सप्तमी	काए, काइ, कीए, कीइ कीआ, कीअ, काहे, कइआ	कासु-सुं, कीसु-सुं
संबोधन	×	×

किम्-किं नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कं, किं	काइ, काइं, काणि
द्वितीया	कं, किं	काइ, काइं, काणि

तृतीया से सप्तमी तक शेष रूप पुलिंगवत् ।

सर्व-सव्व पुलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वो	सव्वे
द्वितीया	सव्वं	सव्वे, सव्वा
तृतीया	सव्वेण-णं	सव्वेहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वम्हा, सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वेहि, सव्वाहिंतो, सव्वेहिंतो, सव्वासुंतो, सव्वेसुंतो
षष्ठी	सव्वस्स	सव्वाण-णं, सव्वेसिं
सप्तमी	सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वहिं, सव्वत्थ	सव्वेसु-सुं
संबोधन	×	×

सर्व-सव्वा स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा	सव्वा, सव्वाओ, सव्वाउ
द्वितीया	सव्वं	सव्वा, सव्वाओ, सव्वाउ
तृतीया	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	×	×
पंचमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए, सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहिंतो	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ सव्वाहिंतो-सुंतो
षष्ठी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वाण-णं
सप्तमी	सव्वाअ, सव्वाइ, सव्वाए	सव्वासु-सुं
संबोधन	×	×

सर्व-सव्व नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइं, सव्वाइँ
द्वितीया	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइ, सव्वाइँ

शेष रूप पुलिंग "सव्व" शब्द की भांति ही चलते हैं ।

क्रिया

प्राकृत में क्रिया के विषय में कुछ विशेषताएँ हैं । जैसे १. धातु २. पुरुष ३. वचन ४. वाच्य (परस्मैपद और आत्मनेपद) ५. क्रिया के भाव ६. काल (वर्तमान, अतीत और भविष्यत्) ७. अ-आगम ८. अभ्यास (द्वित्व) ९. विकरण १०. क्रिया की भूमि ११. क्रिया-विभक्ति (तिङ् विभक्ति) १२. क्रिया का रूप ।

इनके अतिरिक्त भी १३. तुमुन् प्रत्यय है, १४. शतृ और शानच् प्रत्ययान्त शब्द और १५. असमापिका क्रिया भी है ।

इसके अलावा क्रिया में और भी विषय है जिसको हम अलग ढंग से बनाते हैं । वह है १६. कर्मवाच्य, १७. णिजन्त क्रिया, १८. नाम-धातु, १९. सन्नन्त धातु और २०. यडन्त धातु । कुल मिलाकर के क्रिया में केवल इसी विषय में हमलोग ध्यान देते हैं ।

किन्तु उपर्युक्त जो विषय हमने बतलाए हैं वे सभी प्राकृत में नहीं होते हैं । प्राकृत मे उपर्युक्त विषय इतने सरल हो गए हैं कि एक विषय का भाव दूसरे विषय के द्वारा भी प्रकट हो सकता है । हम इन विषयों पर क्रमशः प्रकाश डालेंगे–

१. धातु– धातु साधारणतया एक स्वर की होती है । जैसे कर, हस्, मन् इत्यादि । किन्तु प्राकृत में अन्तिम हलन्त वर्ण नहीं होता है, इसलिए धातु के साथ स्वर (अ) योग करना चाहिए । इसलिए कर् धातु को हमलोग कर रूप से पढ़ते हैं और इसी के साथ क्रिया विभक्ति का योग होता है । अर्थात् कर + इ = प्राकृत में करइ ।

प्राकृत में कोई धातु द्वि-स्वर युक्त भी हो सकती है । जैसे पेक्ख इसका रूप पेक्खइ होता है । इस तरह देखइ, पासइ, हसइ इत्यादि ।

प्राकृत में ऐसा देखा जाता है कि उपसर्ग के साथ जब धातु का योग होता है तब उपसर्ग सहित धातु बन जाती है। जैसे प-इक्ख इससे पेक्ख धातु होती है।

२. पुरूष—संस्कृत के अनुसार प्राकृत में भी तीन पुरूष हैं—उत्तम, मध्यम एवं प्रथम।

३. वचन—प्राकृत में दो वचन हैं— १. एकवचन और २. बहुवचन। द्विवचन के भाव को व्यक्त करने के लिए बहुवचन का प्रयोग होता है।

४. वाच्य (परस्मैपद एवं आत्मनेपद)—संस्कृत में जैसे वाच्य का परस्मैपद एवं आत्मनेपद होता है प्राकृत में ऐसा नहीं होता है। प्राकृत में केवल मुख्यतः परस्मैपद होता है। इसलिए प्राकृत में वाच्य केवल परस्मैपद ही है। कर्म-वाच्य में भी परस्मैपदीय विभक्ति का योग होता है। किन्तु कभी-कभी आत्मनेपदीय विभक्ति का योग होता है। इसलिए रमइ और रमए-इन दोनों का प्रयोग मिलता है। आत्मनेपद का प्रयोग अधिकांशतः अर्धमागधी में होता है। कभी-कभी माहाराष्ट्री प्राकृत काव्य में भी आत्मनेपद का प्रयोग देखा जाता है। वास्तव में उन स्थलों पर संस्कृत का प्रभाव देखा जाता है। कभी-कभी संस्कृत में अगर धातु आत्मनेपद है तो उसी के प्रभाव के अनुसार प्राकृत में भी आत्मनेपद का प्रयोग होता है। किन्तु प्राकृत भाषा के अनुसार सभी स्थलों पर परस्मैपद विभक्ति होनी चाहिए। इसलिए जब कर्मवाच्य में क्रिया-विभक्ति की आवश्यकता होती है तब भी परस्मैपद विभक्ति होती है।

५. क्रिया के भाव— क्रिया के भाव का अर्थ है कि किस तरह से क्रिया निर्देशित होती है अर्थात् क्रिया प्रयोग से कैसे ज्ञात होता है कि क्रिया सामान्य रूप से किसी कार्य के अर्थ का प्रकाशन करती है, अथवा अपना आदेश एवं उपदेश देती है और उचित तथा अनुचित इस भाव को प्रकट करती है वह क्रिया का भाव कहलाता है। इस तरह से क्रिया का भाव सात प्रकार का है— १. निर्देशक, २. इच्छार्थक ३. विध्यर्थक ४. अनुज्ञा-ज्ञापक ५. क्रियातिपति ६. आशीर्ज्ञापक ७. अडागमनिषेधज्ञापक।

प्राकृत में इच्छार्थक, आशीर्ज्ञापक और अडागमनिषेधज्ञापक क्रिया के भाव नहीं होते हैं। इसलिए किसी प्राकृत में नहीं मिलता है।

प्राकृत में केवल निर्देशक, विध्यर्थक, अनुज्ञाज्ञापक और क्रियातिपत्ति का प्रयोग होता है। इसलिए प्राकृत में केवल चार प्रकार धातु सा होता है।

६. काल—प्राकृत में तीन काल हैं :- भूत, वर्तमान और भविष्यत्। संस्कृत में जो लङ् लुङ् और लिट् है उसका प्रयोग प्राकृत में नहीं होता है। प्राकृत में इन तीनों का प्रयोग केवल एक रूप से प्रकट होता है। इसलिए संस्कृत के ज्ञान से प्राकृत में क्रिया का रूप नहीं कर सकते हैं।

कभी-कभी अर्धमागधी में लङ् और लुङ् का प्रयोग देखा जाता है। जैसे देविंदो इणं अब्बवी।

७. अ-आगम— संस्कृत में अ-आगम लङ्, लुङ् और लृङ् में होता है। यह अ-कार अतीत-काल का ज्ञापक है। लङ् और लुङ् प्राकृत में नहीं होता है इसलिए प्राकृत में अ-आगम भी नहीं होता है। क्रियातिपति अर्थात् लृङ् प्राकृत में होता है। लेकिन इसका प्रयोग अ के योग में नहीं होता है। इसलिए प्राकृत में अ-आगम का प्रयोग नहीं होता है।

८. अभ्यास (द्वित्व)—प्राकृत में अभ्यास का प्रयोग नहीं होता है। इसलिए प्राकृत में अभ्यास नहीं होता है। संस्कृत में अभ्यास केवल जुहोत्यादिगण में, लिट् के रूप में, सन्नन्त के रूप में और यडन्त के रूप में मिलता है। प्राकृत में ये सभी विषय दूसरे ढंग से घटित होते हैं। इसलिए प्राकृत में भी अभ्यास नहीं होता है।

अभ्यास का अर्थ धातु को द्वित्व बनाना। जैसे गम् धातु को लिट्-लकार के प्रयोग में धातु का अभ्यास होता है। अर्थात् गम् गम् होता है। इससे जगाम बनता है। यह जो गम् धातु का द्वित्व है वही अभ्यास कहलाता है। प्राकृत में इसका प्रयोग नहीं है। इसलिए प्राकृत में अभ्यास नहीं है।

९. विकरण—प्राकृत में दो विकरण है—अ और ए [ए च] वर्तमाना-पञ्चमी शतृषु वा (हे. ३.१५८)। सभी रूप अकारान्त और एकारान्त से ही होते हैं। जैसे करइ, करेइ, हसइ, हसेइ, गमइ, गमेइ इत्यादि।

संस्कृत में जो १० गण है उन सभी का प्राकृत में दो गणों में विभाजन होता है। किन्तु जब संस्कृत से हम लोग प्राकृत में सीधा रूपान्तरण करते हैं तब संस्कृत के गण का रूप प्राकृत में मिल सकता है। जैसे श्रृणोति प्राकृत में सुणोइ हो सकता है और सुणइ तो होगा हो। प्रायः इस तरह की धातु के गण का रूप प्राकृत में मिलता है।

१०. क्रिया की भूमि— प्राकृत में अन्तिम हलन्त व्यन्जन नहीं होता है। इसलिए प्राकृत में कोई हलन्त व्यन्जनान्त धातु भी नहीं होता है। अर्थात् हस धातु अ विकरण से हस रूप बन जाता है। इसलिए हस प्राकृत में क्रिया की भूमि कहलाती है। इसी के साथ तिङ् विभक्ति का योग होता है। अर्थात् हस् अ-इ = हस-इ = हसइ। क्रिया का रूप समझाने के लिए क्रिया की भूमि के ज्ञान की आवश्यकता है।

११. क्रिया विभक्ति (तिङ् विभक्ति)—प्राकृत में क्रिया के काल और क्रिया के भाव प्रकट करने के लिए तिङ् विभक्ति होती है। वह विभक्ति संस्कृत से भिन्न है। उपर्युक्त क्रिया का काल एवं क्रिया का भाव संस्कृत से अलग है। नीचे विभक्ति का रूप देता हूँ।

	प्र. पुः		मध्य. पुः		उ. पुः	
निर्देशक	१व	बहु.व	१व	बहु.व	१व	बहु.व
वर्तमान	इ, ए	न्ति, न्ते इरे	सि, से	इत्था, ह	मि	मो, मु, म
अतीत	-त-	-त-	-त-	-त-	-त-	-त-
भविष्य	हिइ, हिए	हिन्ति, हिन्ते, हिइरे	हिसि, हिसे	हित्था, हिह	स्सं, स्सामि, हामि हिमि	स्सामो, स्सामु, स्साम, हामो हामु, हाम
अनुज्ञा	उ	न्तु	सु, हि, इजसु, इजहि	ह	मु	मो
विधिलिङ	ज्ज	ज्जा	ज्ज	ज्जा	ज्ज	ज्जा
क्रियातिपत्ति	"	"	"	"	"	"

१२. क्रिया का रूप—प्राकृत में उपर्युक्त क्रिया के तीन कालों एवं पांच लकारों का रूप मिलता है।

		१ धातू/अस्		४ वाच्य ११ क्रिया विभक्ति		९ विकरण १२ क्रिया का रूप	
		२ प्रथम पुरुष		मध्यम पुरुष		उत्तम पुरुष	
		३ एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
५ I N D I C A T I V E निर्देशक	६ वर्तमान	अत्थि	अत्थि	अत्थि, सि	अत्थि	अत्थि, म्हि	अत्थि, म्हो, म्ह
	भूत	आसि, अहेसि,	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि	आसि, अहेसि
	भविष्यत्	होहिइ	होहिन्ति	होहिसि	होहित्था	होस्सामि, होहामि, होहिमि	होस्सामो, होहामो होस्सामु, होहामु होस्साम, होहाम होहिमु, होहिम
विध्यर्थक (Optative)		होज्जइ, होज्जेइ होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा	होज्जासि	होज्जाह	होज्जामि	होज्जाम
अनुज्ञापक (Imperative)		होउ	होंतु	होसु, होहि	होह	होसु	होमो
क्रियातिपत्ति (Conditional)		होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा				
तुमर्थक (Infinitive)		होउं					
शतृशानच् (Participle)		होंत					
असमापिकाक्रिया (Gerund)		होऊण					

		१ धातु कृ कर		४ वाच्य ११ क्रिया विभक्ति		९ विकरण १२ क्रिया का रूप	
		२ प्रथम पुरूप		मध्यम पुरूप		उत्तम पुरूप	
		३ एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
५ I N D I C A T I V E निर्देशक	६ वर्त्तमान	करइ, करेइ	करंति, करेंति	करसि, करेसि	करह, करेह	करमि, करेमि	करमो, करेमो -मु, -म
	भूत	कासी, काही, (करित्था), काहीअ	कासी, काही, काहीअ	कासी, काही, काहीअ	कासी, काही काहीअ	कासी, काही, काहीअ	कासी, काही काहीअ
	भविष्यत्	करिस्सइ	करिस्संति	करिस्ससि	करिस्सह	करिस्सामि	करिस्सामो -मु,-म
विध्यर्थक (Optative)		करेज्जा, कुज्जा	करेज्जा	करेज्जासि	करेज्जाह	करेज्जामि	करेज्जाम
अनुज्ञाज्ञापक (Imperative)		करेउ·	करेन्तु	करेसु, करेहि, कर	करेह	करेमु	करेमो
क्रियातिपत्ति (Conditional)		करेज्जा, कुज्जा	करेज्जा, कुज्जा				
तुमर्थक (Infinitive)		करिउं, करित्तए					
शतृशानच् (Participle)		करन्त, करमाण					
असमापिकाक्रिया (Gerund)		करित्ता करिऊण					

		१ धातु भू–हो		४ वाच्य ११ क्रिया विभक्ति		९ विकरण १२ क्रिया का रूप	
		२ प्रथम पुरुष		मध्यम पुरुष		उत्तम पुरुष	
		३ एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
५ INDICATIVE निर्देशक	६ वर्त्तमान	होइ	होंति	होसि	होह	होमि	होमो
	भूत	हूय, हुवीअ	हूय, हुवीअ	हूय, हुवीअ	हूय, हुवीअ	हूय, हुवीअ	हूय, हुवीअ
	भविष्यत्	होहिइ	होहिन्ति	होहिसि	होहित्था	होस्सामि, होहामि होहिमि	होस्सामो, होहामो होस्सामु, होहामु होस्साम, होहाम होहिमु, होहिम
विध्यर्थक (Optative)		होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा	होज्जासि	होज्जाह	होज्जामि	होज्जाम
अनुज्ञाज्ञापक (Imperative)		होउ	होंतु	होसु, होहि	होह	होमु	होमो
क्रियातिपत्ति (Conditional)		होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा				
तुमर्थक (Infinitive)		होउं					
शतृशानच् (Participle)		होंत					
असमापिकाक्रिया (Gerund)		होऊण					

		१ धातु भण्-भण		४ वाच्य ११ क्रिया विभक्ति		९ विकरण १२ क्रिया का रूप	
		२ प्रथम पुरुष		मध्यम पुरुष		उत्तम पुरुष	
		३ एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
५ INDICATIVE निर्देशक	६ वर्त्तमान	भणइ, भणेइ.	भणंति, भणेंति	भणसि, भणेसि	भणह, भणेह	भणामि, भणेमि	भणमो भणेमो -मु, -म
	भूत	भणिअ	भणिअ	भणिअ	भणिअ	भणिअ	भणिअ
	भविष्यत्	भणिस्सइ, भणेस्सइ	भणिस्संति, भणेस्संति	भणिस्ससि भणेस्ससि	भणिस्सह भणेस्सह	भणिस्सामि भणेस्सामि भणिहामि, भणेहामि भणिहिमि	भणिस्सामो, भणेस्सामो, -मु, -म भणिहाभो, भणेहामो, -मु, -म भणेहाम, -मु, -म
विध्यर्थक (Optative)		भणेज्जा भणेज	भणेज्जा भणेज	भणेज्जासि	भणेज्जाह	भणेज्जामि	भणेज्जाम
अनुज्ञाज्ञापक (Imperative)		भणेउ	भणेन्तु	भणेसु, भणेहि (भण)	भणेह	भणेमु	भणेमो
क्रियातिपत्ति (Conditional)		भणेज भणेज्जा					
तुमर्थक (Infinitive)		भणिउं					
शतृशानच् (Participle)		भणन्त, (भणमाण)					
असमापिकाक्रिया (Gerund)		भणित्ता, भणिऊण					

क्रिया विशेषण (Adverb)

(Adverbs of Place)

त तद् ततः–तओ, [फिर]	इदम् = अ इतः-इओ, एओ [यहां से] अतः [इसलिए]	यद् यतः–जओ, जत्तो [क्योंकि]	कि/ कु / क कुतः–कओ, कुओ [कहां से] कत्तो
तत्र–तत्थ तहि	अत्र–इत्थ	यत्र–जत्थ	कुत्र–कत्थ कत्थइ
[वहाँ]	[यहां] इह	[यहाँ] जहि	कुह–कहिं कहिंचि क्व– कहिंपि
तथा–तह [उस तरह]	इत्थं–इहं [इस प्रकार]	यथा–जह [जैसे]	कथं–कहं [कैसे]
तदा–तया [तब] तर्हि–तहिं	इदानीम्-दाणिं [इस समय] एतर्हि-एहिं	यदा–जया [सब] यर्हि–जहिं	कदा–कया, सदा–सया [कब] कर्हि–कहिं
[तब तो] ताह	एगत्थ	जाह	

एगत्थ-एक स्थान पर (in one place), अन्नत्थ-अन्यत्र (in another place) सव्वत्थ-सर्वत्र (everywhere), उड्ढं-ऊपर (above), हेट्ट-नीचे (below), बाहिं-बाहर (outside), अग्गओ-पहले (before), पच्छा-पीछे (behind), अन्तरा-बीच में (in the middle), दुरओ- (from afar) ।

Adverbs of Time

१. अज्ज-आज (today)
२. एण्हिं, एत्थाहे, इयाणिं, संपय–अभी (now)
३. ता, तया, तओ, तो, तइया, ताहे–तब (then)
४. जया, जइया, जाहे–जब (when)
५. कया, कइया–कब (when)
६. जाव...ताव, जा...ता, जब...तक (while then)
७. कल्लं-कल (yesterday)

८. सुवे-दूसरे दिन (tomorrow)
९. पुव्विं, पूरा–पहले (earlier)
१०. निच्चं, सया, सइ सययं–सदा (always)
११. सहसा, झत्ति–अचानक (suddenly)
१२. नवरं-अकेला (alone)
१३. नवरि-उसके बाद (thereafter)
१४. पुणो-फिर से (again)
१५. ताव य, एत्थन्तरे–इत्यवसरे (in the mean while)

Adverbs of Manner

१. न, मा-नहीं (not)
२. इव, विय, पिव, व्व, मिव, विव–तरह (like)
३. एवं, तहा–इसलिए ऐसा हो (so)
४. कहं पि-कैसे ही (somehow)
५. सम्मं-ठीक प्रकार से (properly)
६. समं-साथ (together)
७. बाढ़ं, धणिय–बहुत (very)
८. ईसि, मणं–थोड़ा (little)
९. अवस्सं-अवश्य (necessarily)
१०. लोहुं, सिग्धं–शीघ्र (quickly)
११. सणियं-धीरे धीरे (slowly)
१२. कमेण-क्रम से (in course)
१३. सुट्ठु-अच्छा (well)
१४. केवलं, नवरं–केवल (only)
१५. सेयं-श्रेयस् (better)

उपसर्ग (Preposition)

अइ (अति)	अतिक्रमण करना	अइक्कमइ (अतिक्रमण करना)
	(beyond, over)	अइगच्छइ (करते जाना)
अणु (अनु)	पश्चात्	अणुकरेइ (अनुकरण)
	(after.....	अणुजाणइ (स्वीकृति)
अव (अप)	स्थान छोड़ना	अवक्कमइ, अवरज्झइ, ओहरह
ओ	away, off,	

अभि (अभि)	ओर से	अभिगच्छइ, अभिवड्ढइ, अभिहवइ
अव (अव)	कहीं से हटना	अवतरइ, अवमाणेइ, ओगाहइ
ओ	away.....	
आ (आ)	किसी तरफ जाना	आरुहइ, आगच्छइ
	upto, on	
उद् (उद्)	ऊपर (upon)	उग्गमेइ, उत्तरइ, उद्दिसइ
उव (उप)	ओर से, समीप	उवागच्छइ, उवमेइ, उवधारेइ
	(towards, near)	
दुस् (दुस्)	बुरा कठिन	दुच्चरेइ, दुक्करेइ
	..... hard	
निस् (निस्)	निकलता	निग्गमइ, निस्सरइ
	(out, away)	
परि (परि)	चारों ओर	परिगणेइ, परिवड्ढेइ
	(all round)	
पडि, (परि)	ओर से	पडिवालेइ
(प्रति)	(towards)	
वि (वि)	पृथक् करना	विक्किणइ, विकुव्वइ, विवरेइ
सं (सम्)	साथ-साथ	संगमइ, संतोसेइ
	(together)	
सु (सु)	अच्छा (well)	सुलद्धे, सुकरेइ
पाउ (प्रादुस्)	उन्मुक्त (open)	पाउकरेइ, पाउब्भवइ

कारक नियन्त्रित उपसर्ग (Prepositions governing cases)

कर्म कारक	अन्तरेण, जाव, पइ, मोत्तूण, आदाय, गहाय (बिना) (जब तक) (के प्रति) (सिवाय) (साथ) Without, until, towards, except, with
करण कारक	समं, सद्धिं, सह, विणा (साथ) (बिना) with, without
अपादान करक	आरब्भ (से) from

सम्बन्ध कारक पुरओ, उवरिं, समीवं, कए, हेट्ठा, बाहि, पच्चक्खं
(पहले) (ऊपर)(समीप) (लिए) (नीचे) (बाहर) (प्रत्यक्ष)
before, above, near, for, below, outside, in the presence of.

समुच्चयबोधक शब्द (Conjunction)

संयोजक (Copulative/connective)	अ, च, य, किंच
वियोजक (Disjunctive)	वा, अहवा
प्रतिपाक्षिक/प्रतिबेधक (Adversative)	अहवा, किन्तु
अवस्थात्मक (Conditional)	जइ
प्रत्यक्ष उक्ति (Direct speech)	त्ति, ति, इ इइ
व्यवस्थात्मक (Concessive)	तदाहि

मनोभाव प्रकाशक शब्द (Interjection)

मनोभाव प्रका. शब्द	प्रयुक्त अर्थ	सूत्र	उदाहरण
हुं	giving, asking speaking emphatically	हुं दान-पृच्छा-निवारणो (ii,१९७)	दाने-हूँ गेण्ह अप्पणो जीओ पृच्छायां-हूं साहूसु सब्भावं । निवारणे-हूँ हूंवसु तुण्हिक्को ।
विअ, वेअ चिअ, चेअ,	asseveration	णइ चेअ चिअच्च अवधारणे	एवं विअ । एवं चेअ
ओ	indication remorse indicision	(ii. १८४) (ii. २०३)	ओ चिर असि
हर, फिर	doubtful	किरेर हिर	पेक्ख हर तेण हदो ।

किल	assertion	किलाथेअ वा (ii. १८६)	अज्ञ किर तेण ववसिओ। अअं किल सिविणओ।
हुं (क)खु	resolution, doubt, reflection	हुं खु निश्चय-वितर्क संभावन- (ii. १९८)	हुं रक्खसो । गरुओ क्खु भारो ।
णवर	only	णवर केवले (ii. १८७)	णवरं अन्नं
णवरि	immediate sequence, then	आनन्तर्ये णवरि (ii. १८८)	णवरि
किणो	asking a question	किणो प्रश्ने (ii. २१६)	किणो धुव्वसि । किणो हससि ।
अव्वो	distress indication reflection	अव्वो सूचना दुःख— संभाषणापराध-विस्मयानन्दा-दरभय खेद-विषाद पश्चात्तापे (ii. २०४)	सूचनायां-अव्वो अवरं पिअ । संभावने-अव्वो णमिव अत्तुं ।
अलाहि	opposition	अलाहि निवारणे (ii. १८९)	अलाहि कलहवंधेण
बले	addressing a	बले निर्धारण-निश्चययोः (ii. १८५)	अइ मूलं पसूसइ·
अइ	person	अइ संभावने (ii. २०५)	
णवि	in the same of contrariety	णवि वैपरीत्ये (ii. १३८)	णवि तर पहसइ बाला।

थू	censure	थू कुत्सायाम् (ii. २००)	थू सिविणो ।
रे अरे, हरे, हिरे	addressing a person, of delight quarrelling	रे अरे संभाषण रतिकलहे (ii. २०१) हरे क्षेपे च (ii. २००)	रे मा करेहि णाओ सि अरे । दिट्ठो सि हिरे ।
मिव, पिव, इव	like, simile	मिव पिव विव व्व व विउ इवार्थे वा । (ii. १८२)	गअणं मिव । गअणं विअ कसणं
अज्ज	addressing courteously	अज्ज आमंत्रणे	किं करेसि अज्ज महाणुहाव

सूत्र है वररूचि का । बंधनी में हेमचन्द्र सूत्र के साथ तुलनीय है ।

 भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली

 राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली मानित विश्वविद्यालय